मधुर डिप्रेशन

लेखकः
मधुकर सहाय
(मधुकर मधुर)

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Madhukar Sahay 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-827-8

Cover design: Mr. Madhukar Sahay
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: December 2025

श्रद्धेय पिताश्री स्व0 श्री धनंजय सहाय

को समर्पित...

आमुख

'मधुर डिप्रेशन' संग्रह आपके हाथों में है। संग्रह का थोड़ा परिचय आवश्यक है क्योंकि पेशे से मैं काव्य से बिल्कुल ही अलग क्षेत्र में हूँ लेकिन जब कभी भी कोई अनुभव, कोई अनभूति होती है तो उसे कागज पर उतारते समय थोड़ी बहुत कविता की शक्ल दे देता हूँ, इसलिए सम्भव है पाठकों को संग्रह में कमियाँ भी नजर आएं, जिसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

जहाँ तक कविता लेखन का प्रश्न है, जीवन का संघर्ष व्यक्ति की चेतना को जब-जब झकझोरता है, तब संवेदना की मिट्टी से, अनुभूति की उष्मा लेकर विचार की एक कोंपल जन्म लेती है जिसे व्यक्ति अपनी-अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्त करता है। इस क्रम में यह मेरा प्रथम प्रयास है।

काव्य जगत में यह प्रयास किसी वर्ग, वाद या विचार विशेष का प्रतिनिधित्व करने का प्रयास नहीं है बल्कि एक छोटे से शहर से आकर महानगरीय संस्कृति के पाटो में पिसते एक युवक की आँखों के सपने की कुछ किस्से हैं जिन्हें वह कभी न खत्म होने वाली दिनचर्या में से कुछ समय निकाल कर चुनता है।

इन सपनों में मिलने-बिछुड़ने, पाने-खोने का दर्द तो है पर ऐसा नहीं कि जिसमें वह थक हार कर बैठ जाता हो - ऐसे हर एहसास को वह चंद पंक्तियों में पिरोकर अपनी स्मृति के खजाने में सहेज लेता है, उनसे जीने की प्रेरणा लेता है। थके-हारे निराशा और अवसाद के पलों में उन स्मृतियों की खुशबू से खुद को तरोताजा करता है।

ये भावनाएं, ये कवितायें डिप्रेशन से उपजी जरूर हैं, फिर भी उनकी स्मृति मधुर है क्योंकि ये उसके अस्तित्व का हिस्सा है - वो हिस्सा, जिसके ना होने से खालीपन और अधूरापन का एहसास होता है और जिसका होना उसके व्यक्तित्व का एक पहलू है, जिसमें वह खुद को तलाशता है।

इन क्षणों को जीने और महसूस करने में जिन मूर्त-अमूर्त, सजीव-निर्जीव, जो भी वस्तुएं या व्यक्ति माध्यम बने हैं, मैं कृतज्ञ हूँ उनका जिन्होंने मुझे अपनी ही तली में जाकर व्यक्तित्व की काई हटाकर खुद को जानने और पहचानने का अवसर दिया। जब ये क्षण कविताओं की शक्ल में कागजों पर आए तो इन्हें संग्रह की शक्ल में औरों तक पहुँचाने की प्रेरणा और आशीर्वाद श्री मनीष कुमार गर्ग जी से मिली, जो स्वयं एक सुधी पाठक भी हैं और एक सहृदय व्यक्तित्व भी - जिन्हें मेरी लेखनी पर विश्वास है, उन्हीं के विश्वास के बल पर मैं अपने प्रथम संग्रह के साथ आपके सामने हूँ। अपने प्रयास में कितना ईमानदार हूँ, इसका प्रमाण रचनायें स्वयं दें तो ज्यादा अच्छा हो, पर कितना सफल हूँ, इसके लिए आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

मधुकर सहाय
(मधुकर मधुर)

प्राक्कथन

प्रिय पाठक!

मेरी दृष्टि में 'मधुर डिप्रेशन' संग्रह किसी जिज्ञाशु बच्चे के उस प्रयास सा है जो जिज्ञासा और कौतूहल के वशीभूत किसी नदी तट पर पड़े अनगढ़ रंगीन पत्थरों के टुकड़े इक्क्ठा करता है, उन्हें किसी अमूल्य धरोहर की तरह संजोता है - और किसी दुर्लभ संग्रह की तरह उसका प्रदर्शन करता है। यूँ तो उन अनगढ़ पत्थरों का कोई मोल नहीं पर उसका सौंदर्य उसके लिए अमूल्य है और संवेदना से भरी कोई भी दृष्टि उस बालक की आँखों की चमक, उत्साह, उसकी घायल अंगुलियाँ और रेत से भरे पाँव देखकर उसके निश्छल और निर्दोष प्रयास, मेहनत और जीवन के प्रति उसकी ललक देखकर उसके संग्रह का सही मूल्यांकन कर सकती है। इस संग्रह को भी ऐसी ही दृष्टि की दरकार है।

शुभकामनाओं सहित

रश्मि सिन्हा

संकलनक

प्रेरणास्त्रोत

मित्रों!

मैं एक चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट हूँ। लगभग 25 साल से नोएडा में प्रैक्टिस कर रहा हूँ। मैं मधुकर जी को करीब 24 साल से जानता हूँ। मधुकर जी पहली बार मेरे ऑफिस में लोन का प्रस्ताव लेकर आये थे, लेकिन उनके मित्र बनाने की कला ने मुझे उनका मित्र बना दिया। लेकिन वे एक अच्छे कवि भी हैं, उनके कविताओं की कला के बारे में मुझे उस समय पता चला जब उन्होंने फेसबुक पर "चिरागी देते जाओ" और "डिप्रेशन" नामक कविताएँ डाल दी। मधुकर जी की इन दो कविताओं ने मेरे मन को प्रभावित किया। मैंने उनसे कहा कि और कवितायें लिखें।
शायद इसी कविताओं की प्रेरणा पर मुझे ध्यान में रखकर उन्होंने यह काव्य संकलन लिखा है। मुझे खुशी इस बात की है कि आज वो सारी कवितायें एक किताब के रूप में हैं।
मैं मधुकर जी को हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

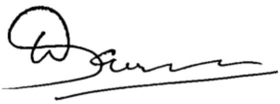

मनीष कुमार गर्ग
चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट

अनुक्रमणिका

1. चिरागी देते जाओ 1
2. मधुर डिप्रेशन 3
3. समझो मधुर 5
4. शब्द-शब्द ढूंढेगा 6
5. महुआ महक 7
6. हवा में जादू है 8
7. चौधरी मोड़ 9
8. औसम खिलौना 10
9. मुर्जरद मधुर 12
10. मज़ार पर धूप 13
11. अच्छा है मेरा घर 14
12. अमनदीप जलाये रखूँ 16
13. आधा-आधा 18
14. उड़ो कि वक्त है 19
15. कुछ तो चाहिए 20
16. चाहता तो मैं भी यही हूँ 21
17. डिप्रेशन 23
18. तन्हा हूँ मैं 24
19. दीवाना हो गया हूँ 25
20. वो बेईमान है 27
21. पतंगे 29

22. बिस्कुट 30
23. जगा दो मुझे 32
24. मधुकर हूँ..33
25. मेरे बस की बात नहीं 34
26. लाल टीका 35
27. हम तुम मिलेंगे जरूर 36
28. अच्छा होता...37
29. अन्नी 39
30. आगे क्या होगा..40
31. कम्प्रमाइज 42
32. कुछ तो होगा...43
33. क्या मिला 45
34. क्या लिखूँ..46
35. गुब्बारा 48
36. तुम्हें भुलाने में...49
37. रुतबा नहीं रहा..51
38. ख़्वाब टूटे नहीं...52
39. छू हो जाऊँ 53
40. जलजला...54
41. जुल्फें फैलाओ...56
42. तुमसे मिलूंगा मैं 57
43. दिमागी तूफान 59
44. दिल अगर है समुन्दर 60

45. नुपुर 61
46. पीता नहीं हूँ मैं 62
47. फिर तन्हा हूँ मैं 63
48. वनिता रानी..65
49. बस एक बेबसी रह गयी 67
50. बारिश में 69
51. मैं बेखबर हूँ 70
52. मैं तुझे भूलूंगा कैसे 71
53. रोता रहा..73
54. वो यहाँ भी है..74
55. शहर चलता रहेगा 75
56. श्वाति की बून्द..77
57. सिमरन..78
58. भुला दें 80
59. परसिस्टेंसी..81
60. मुझे जरुरत है..83
61. रंग दे 85
62. चाँदनी की गुड़िया 87
63. तितली..90
64. इश्क़ अब नहीं है 92
65. एक चिन्गारी 94
66. ये दिल्ली शहर है 95
67. होली का रंग 96

68. घर मिलेगा कब.....97
69. मिसिंग यू.....99
70. मधुकर निराला तो अब हुआ है.....101
71. सितारा मिल गया.....102
72. कुछ तो लाओ.....103
73. मौसम.....105
74. रेड लाइट.....106
75. क़ब्र पर पैग़ाम.....108
76. आदमी.....110
77. उधार लेते जाओ.....111
लेखक परिचय.....113

1. चिरागी देते जाओ

हमें चिरागी देते जाओ
अपने ही मज़ार पर
हर रोज़
चिराग जलाया करेंगे हम

तुम्हें याद करने के
बहाने बहुत हैं
वादा बस इतना
तुम्हें नहीं याद आया करेंगे हम

यें निगाहें, यें निगाहें
दूर तक नहीं जाती
जलते चिराग का धुआँ सही
तेरे कस्बे में
पर रोज़
आया-जाया करेंगे हम

हमें चिरागी देते जाओ
अपने ही मज़ार पर
हर रोज़
चिराग जलाया करेंगे हम

चाँद बगैर काटा है
कई रात खुमारी में
अब रोज़ रातों को जागेंगे
चाँद से निगाहें
मिलाया करेंगे हम

हमें चिरागी देते जाओ
अपने ही मज़ार पर
हर रोज़
चिराग जलाया करेंगे हम

उम्मीद थी जहाँ से
"रौशनी" की
इल्ज़ाम-ए-इश्क़ देखो "मधुर"
अंधेरों में रोज़
काफिलों को
रास्ता दिखाया करेंगे हम

हमें चिरागी देते जाओ
अपने ही मज़ार पर
हर रोज़
चिराग जलाया करेंगे हम।

2. मधुर डिप्रेशन

हर एक आदमी के अन्दर
एक आस होती है
एक अनोखी सी
प्यास होती है
जिसे वह
खुद को मार कर
लोगों में बाँट कर
पाना चाहता है
ये उसका
“मधुर इम्प्रेशन'' है
और
जो छूटा सा रह गया
पाया नहीं
जुदा हो गया
तन्हा कर गया
मिलता नहीं और शायद
मिलेगा भी नहीं
ये उसका
“डिप्रेशन” है
और
खोने पाने की खेल में
समां गया

जो दिल की चादर पर चढ़ गया

इकट्ठा है

जाता नहीं है

वो मधुर है

वो डिप्रेशन है

“मधुर डिप्रेशन” है।

3. समझो मधुर

ऐसा समझो “मधुर” दुनिया में
कोई नहीं है
आंसू ही आंसू है, और ये वादिया यहाँ
रोई नहीं है

सूरज को अपनी फिक्र है
चाँद को अपनी फिक्र है
टूटे तारों का यहाँ
कोई नहीं है

प्यासे रहो, पानी तभी मिलेगा
जब सावन आयेगा
छाँव देने वाला यहाँ
कोई नहीं है

सजा सको तो सजा लो
दर्द के कुछ और पन्ने “मधुर”
सुनने वाला यहाँ
कोई नहीं है
ऐसा समझो ‘मधुर’
दुनिया में कोई नहीं है
आंसू ही आंसू है, और ये वादिया यहाँ
रोई नहीं है।

4. शब्द-शब्द ढूंढेगा

चाँद उतर कर फलक से
मेरे घर आया नहीं
तुझसे जिंदगी मांगी थी
तेरा साया नहीं

पानी तेरे चेहरे का
दिल को छू गया मगर
मेरी आँखों पर कोई कतरा
नजर आया नहीं

ये चिराग जलते-जलते
मरेगा अगर
तुमने आकर
बुझाया नहीं

शब्द-शब्द लिखा मेरा
मुझे ढूंढेगा अगर तुमने
डायरी के उन "मधुर" पन्नों को
मिटाया नहीं
चाँद उतर कर फलक से
मेरे घर आया नहीं
तुझसे जिंदगी मांगी थी
तेरा साया नहीं।

5. महुआ महक

तुम रहो जहाँ, वो जहां महके
ये शहर महके, दिल-ए-मकाँ महके

तेरे बालों ने ली है जब से करवट मेरे हाथों की
छू दूँ जिसे वो साज-वो-समां महके

तेरे आँखों में है मस्ती महुआ की
तुम अगर देखो तो मेरा जिस्म-वो-जान महके

बांध रखा हूँ तुम्हारी याद को घरौंदों में
ताकि ये मिट्टी महके, आसमां-ओ-हवा महके

तुम रहो जहाँ, वो जहां महके
ये शहर महके, दिल-ए-मकाँ महके।

6. हवा में जादू है

माना हवा में जादू है
फिर भी हमें क्या देगा ?
हमारी खामोश खुशबू को
हवा में उड़ा देगा

जब भी खत पढ़ता हूँ
मेरी आँख में नमी होती है
ये वक्त बड़ा गनिज़ है
इसे जल्द ही सुखा देगा

मेरे शहर मत आना अशरफ
यहाँ बहुत यारी है
आग, हवा, पानी में
तुम्हें कहीं न कहीं छुपा देगा

डायरी में तुम्हारे दिल को जिस भी
तरह सजाये "मधुर"
दुःख देगा, दर्द देगा, बेबसी देगा
और हमें क्या देगा ?

माना हवा में जादू है
फिर भी हमें क्या देगा ?
हमारी खामोश खुशबू को
हवा में उड़ा देगा।

7. चौधरी मोड़

“चौधरी मोड़” से शुरू हुआ प्यार “मधुर”
अँधेरी मोड़ पे
दफ़न हो गया

जिस मुस्कुराहट ने लपेट रखा था
आज वही मेरा
कफन हो गया

दिल ऐसे तन्हा आज़ाद हुआ
मानो हाथ से छूटा
पतंग हो गया

नहीं रहा मधुर-रंग-हवा-हुस्न
उजड़ा सा ये मेरा
चमन हो गया

मैं खुश था, वो भी खुश था फिर
हुआ क्या जो वो
अफन हो गया

मुस्कुराहट जिस ने लपेट रखा था
आज वही मेरा
कफन हो गया

प्यार शुरू हुआ चौधरी मोड़ से
और अँधेरी मोड़ पे
दफ़न हो गया।

8. औसम खिलौना

बहुत सी जिम्मेदारियों को
टाल रहे हैं हम
शहर से दूर एक घर में
बच्चे पाल रहे हैं हम

सुबह से कॉल की
किच-किच
पैसे की
फिच-फिच
में देखते हैं बच्चों का भविष्य
जाने क्या इन अंगुलियों से
चाल रहे हैं हम

पल भर के लिए
ठहर कर
खुद को देखना
होता है मुश्किल,
लगा कर चक्का कार का
पैरों में
शहर चाल रहे हैं हम

बच्चों की जिद्द

नहीं समझी

एक “औसम” खिलौना ला दिया

जलाकर

दूसरों की जेब

सिक्के चाल रहे हैं हम

बहुत सी जिम्मेदारियों को

टाल रहे हैं हम

शहर से दूर एक घर में

परिवार पाल रहे हैं हम।

9. मुर्जरद मधुर

अच्छा हुआ मेरी मौत, मैखाने में हो गयी
आधी पी थी, आधी पिलाने में हो गयी

ये उसके याद की आखरी कश थी
आधी पी, आधी उड़ाने में हो गयी

यूँ तो मुझे याद है उसका सारा उभार-ए-बदन
मौत तो आँखों की चुभन भूलने में हो गयी

अपने पास था ही क्या, जागीरे मुहब्बत
आधी लूटी गयी, आधी लुटाने में हो गयी

भर ना सका प्याला, रहा "मुर्जरद मधुर"
आधी रुठने, आधी मनाने में हो गयी

अच्छा हुआ मेरी मौत, मैखाने में हो गयी
आधी पी थी, आधी पिलाने में हो गयी।

10. मज़ार पर धूप

मेरे मज़ार पर धूप की
रौशनी नहीं पड़ती

जिन-जिन बातों को
मैं सोच कर मरा
वो बातें अब बार-बार
सोचनी नहीं पड़ती

अब ख़ामोशी में भी वो सुन लेता है
मेरी सारी बात
बातें वही बार-बार
बोलनी नहीं पड़ती

एक चिराग़ था
जला दिया
शहर रौशन है, घर भी
मगर उस चिराग़ की
मुझ पर
रौशनी नहीं पड़ती

मेरे मज़ार पर धूप की
रौशनी नहीं पड़ती।

11. अच्छा है मेरा घर

अच्छा है मेरा घर
रोने के लिए
तन्हाई की चादर से लिपट-लिपट कर
सोने के लिए

तस्वीर से लिपटी हुई
चूड़ियों की
खनखनाहट
तेरी याद पिरोने के लिए
और फिर
धुएँ का हर एक कस
हर एक साँस के साथ
तुझे
भुलाने के लिए

डायरी के
हर पन्ने पर
मैंने लिखा
बस एक ही कलाम
पायी थी ये जिंदगी
"मधुर" तुझे

सिर्फ सिर्फ सिर्फ और सिर्फ

खोने के लिए

अच्छा है मेरा घर

रोने के लिए

तन्हाई की चादर से लिपट-लिपट कर

सोने के लिए।

12. अमनदीप जलाये रखूँ

अमनदीप जलाये रखूँ
अमनदीप जलाये रखूँ
चाहता तो मैं भी यही हूँ
आँखों में तेरा चेहरा
बसाए रखूँ
अमनदीप जलाये रखूँ

आँखों में बसी है तेरी हँसी
इस कदर
जैसे बन्द मुट्ठी में
खूबसूरत कली
खोलूँ या फिर
दबाये रखूँ
अमनदीप जलाये रखूँ

तुमसे मिलने पर मिलता है
मुझसे मेरा दिल
बोलो तो
कुछ बोल दूँ
या फिर दबाये रखूँ,
अमनदीप जलाये रखूँ

खो दूंगा एक दिन मैं तुम्हें

इन्हीं फिजाओं में

खुशबू की तरह,

"मधुर" हवाओं को ये बात बताये रखूँ

अमनदीप जलाये रखूँ

अमनदीप जलाये रखूँ।

13. आधा-आधा

दिन भर सूरज चढ़ा रहा
और
चाँद निकला कितना
आधा-आधा

दिले-यार ने सारा शहर घुमा दिया
रौशनी का हर पहर दिखा दिया
और प्यार दिया कितना
आधा-आधा

हम दोनों अपनी अपनी प्यास लिए
बैठे रहे देर तलक और
पिया कितना
आधा-आधा

मौत तो आनी ही है एक दिन
कह देंगे "मधुर" जिंदगी से
जिया कितना
आधा-आधा
दिन भर सूरज चढ़ा रहा
और
चाँद निकला कितना
आधा-आधा।

14. उड़ो कि वक्त है

जिंदगी से कोई गिला न रहे
गमों का कोई सिलसिला ना रहे

उड़ो कि अभी वक्त है, क्या पता
कल आकाश का रंग नीला ना रहे

रात भर क्यों जागो, क्या पता
कल सांसो का सूरज निकला ना रहे

आज तो रंग में हो गोरी क्या पता
कल "मधुर" शायद रंगीला ना रहे।

15. कुछ तो चाहिए

कुछ तो चाहिए
दिल बहलाने के लिए
उलझी हुई जुल्फों
को सुलझने के लिए

दिल कहता था
बदले में गुलाब दे गया
पंखुड़िया हवा में
उड़ने के लिए

वो आया न उसका
कोई रहनुमाई
बस एक खत बचा है
दीवारों पर सजाने के लिए

तन्हा शहर, तन्हा घर
तन्हा दीवार, तन्हा जिस्म
बस एक “मधुर” याद छोड़ गया
दोहराने के लिए

कुछ तो चाहिए
दिल बहलाने के लिए।

16. चाहता तो मैं भी यही हूँ

चाहता तो मैं भी यही हूँ
कोई छोड़कर जाय मुझे

कौन जलता है
सतत
हवाओं में बनकर चिराग
हवाओं से कह दो
जल्दी
बुझाये मुझे

इस शहर का
एक ही रंग
और एक ही खुशबू
कोई नई हवा चले
और
छूकर जाये मुझे

तुझे पाने की ये मेरी
आखरी कोशिश
वरना फिर बहना होगा
इन्हीं धाराओं के साथ
चांदनी से कह दो

चाँद तक
खींच कर लाये मुझे

"मधुर" डायरी का हर एक
तन्हा पन्ना
खून से सनी मेरी कलम
न जाने कब
इतिहास के पन्नों तक
खींच कर लाये मुझे

चाहता तो मैं भी यही हूँ
कोई छोड़कर जाये मुझे

कौन जलता है
सतत
हवाओं में बनकर चिराग
हवाओं से कह दो
जल्दी
बुझाये मुझे।

17. डिप्रेशन

वक्त यूँ जिंदगी दिखाता चला गया
चाँद पेड़ के पीछे छिपा रहा, मुस्कुराता रहा और चला गया

मुक्कदर ना बना था हमारे लिए, "मधुर" वो मुझे
हर रास्ते पर मिला, हाथ मिलाया, और चला गया

जिंदगी प्यालों मे डूबी और डूबती चली गयी,
और जो छलका, वो मुझे छलाता चला गया

सबने दिए अपने-अपने दर्द के निशान "मधुर"
कुछ खुद मिटे और कुछ मैं मिटाता चला गया

वक्त यूँ जिंदगी दिखाता चला गया,
चाँद पेड़ के पीछे छिपा रहा, मुस्कुराता रहा और चला गया।

18. तन्हा हूँ मैं

मैं यहाँ हूँ वहाँ हूँ
कहाँ हूँ मैं ?
सिर्फ इतना जानता हूँ
तन्हा हूँ मैं

छाया दिल पर
उसकी भी, उसकी भी
मगर किसी के दिल में
कहाँ हूँ मैं ?

तपन जिस्म का
उसका भी, उसका भी
हाय मेरी जिंदगी
धुआँ हूँ मैं

सलीके से नहीं
मेरा घर
औरों से सुना है
आँधियाँ हूँ मैं

मैं यहाँ हूँ वहाँ हूँ
कहाँ हूँ मैं ?
सिर्फ इतना जानता हूँ
तन्हा हूँ मैं।

19. दीवाना हो गया हूँ

दिल से दिल मिला
सारा बदन
याराना हो गया
अब कोई नया ज़ख्म दो
ये ज़ख्म-ए-दिल
अब पुराना हो गया

चढ़ गई तेरी हँसी
मेरे लबों पर
कहने लगे हैं
सभी
ये शख्स
दीवाना हो गया

वक्त बदल गया है
तुम भी बदल डालो
अपने होंठो की लाली
ज़ुबां का
ये तर्ज
पुराना हो गया

जब भी घर पहुँचता हूँ
तेरी यादों की तस्वीर

लटकी मिलती है
जैसे घर
घर न हुआ
मैख़ाना हो गया

कल शाम का
लेता हूँ
अब उठा भी दो "मधुर"
सुबह हुए तो
अब
जमाना हो गया

दिल से दिल मिला
सारा बदन
याराना हो गया
"मधुर" अब कोई नया ज़ख्म दो
ये ज़ख्म-ए-दिल
अब पुराना हो गया।

20. वो बेईमान है

चेहरे पे ख़ामोशी
ख़ामोशी में लहर
लहर में तूफ़ान है
आपका चेहरा बेईमान है

आँखों में सितारे
सितारों में चमक
चमक में खुशबू
खुशबू जो
जीने का सामान है
आपका चेहरा बेईमान है

मन में गूंजती हुई आवाज
आवाज में सुर
सुर में गीत
गीत वो
जो प्रेम का सामान है
आपका चेहरा बेईमान है

चौड़े शादो पर
बंधी घटा
घटा में लम्बे-लम्बे बादल
और खुली घटा

जो मेरी क़यामत का सामान है
आपका चेहरा बेईमान है

दिल में अँधेरा घनघोर
ढूंढो रोशनी
चारों ओर
मेरा दिल भी
जो एक दीप सामान है
आपका चेहरा बेईमान है।

21. पतंगे

दूर सरहद से आयी थी पतंगे
जानता था पराई थी पतंगे

कटी-कटी सी, फटी-फटी सी
झगड़ों मे चरमराई थी पतंगे

खुद को पाने की चाह में मुझको
बहुत दूर तक दौड़ाई थी पतंगे

टूटे रिश्तों का जोर कितना,
मुझको तो बहुत भाई थी पतंगे।

22. बिस्कुट

बहुत मुश्किल से पीता हूँ मैं
टुकड़े-टुकड़े खाकर जीता हूँ मैं
फिज़ा बेकरार सी है
हालत लाचार सी है
क्या मिलता है जंगल से
इस शहर में
सुबह, शाम, दुपहर में
"एक कप चाय"
देखकर चिढ़ता हूँ मैं
बहुत मुश्किल से पीता हूँ मैं

उफ्फ! उनका ये विष-कुट
कमाल सा लगता है
चाकू, तीर-कमान सा लगता है,
अब देखकर बिस्कुट
चिढ़ता हूँ मैं
बहुत मुश्किल से पीता हूँ मैं

जिंदगी के लम्बे सफर में
एक जीत
मायने नहीं रखती
देखकर उनकी अधूरी हार

तड़पता हूँ मैं

इस शहर में
बहुत मैखाने हैं
कुछ छोटे, कुछ बड़े, कुछ नए, कुछ पुराने हैं
फिर
दोस्ती एक बड़ा शब्द है
करने से डरता हूँ मैं

बहुत मुश्किल से पीता हूँ मैं
टुकड़े-टुकड़े खाकर जीता हूँ मैं।

23. जगा दो मुझे

रौशनी दो, चिराग दो मुझे
मैं
यहाँ हूँ
आवाज दो मुझे

फँसा रहा प्यार मेरा
तेरे पिंजरे में
खुली आकाश है,
उड़ा दो मुझे

जल-मरा होऊंगा मैं अब तलक
खाक मेरी कहती है
हवा में
उड़ा दो मुझे

सवेरा हो चुका होगा अब तक
शायद ख़्वाब में हूँ
"मधुर"
जगा दो मुझे

रौशनी दो, चिराग दो मुझे
मैं
यहाँ हूँ
आवाज दो मुझे।

24. मधुकर हूँ

इश्क छोड़े जा रहा हूँ
इश्क़-ए-गुब्बार छोड़े जा रहा हूँ
आपके लिए ढेर सारा प्यार
छोड़े जा रहा हूँ

जब-जब आये सुगंध
इस धरती से
मुझे याद करना
"मधुकर"
हूँ
मधुधार छोड़े जा रहा हूँ

भटकना नहीं मुसाफिर
जब चाहे चले आना
"मधुशाला"
ये पुरानी सही
एक पुकार
छोड़े जा रहा हूँ
इश्क छोड़े जा रहा हूँ
इश्क़-ए-गुब्बार छोड़े जा रहा हूँ
आपके लिए ढेर सारा प्यार
छोड़े जा रहा हूँ।

25. मेरे बस की बात नहीं

इस उमर में चिलमन उठाना
मेरे बस की बात नहीं
इस! इस दिल का फिर जी लगाना
मेरे बस की बात नहीं

किसी स्वप्न-सुंदरी के
सपने उतार
खुद का दिल बहलाना
मेरे बस की बात नहीं

अब प्यास बुझेगी
इन्हीं आंसुओं से
सिसकियों से शोर मचाना
मेरे बस की बात नहीं

क्यों उम्मीद-ए-दामन चढ़ा रखा है
अपनी आँखों पर "मधुर"
ऐसे मौसम में मुस्कुराना
मेरे बस की बात नहीं

इस उमर में चिलमन उठाना
मेरे बस की बात नहीं
इस! इस दिल का फिर जी लगाना
मेरे बस की बात नहीं।

26. लाल टीका

ये नखरे, ये अदा रोज दिखलाया करो तुम
किसी रात
मेरे सपने में भी
आया करो तुम

तुम्हारे आँखों के इशारों पर
नाचती है दुनिया
अपनी पुतलियों पर मुझे
नचाया करो तुम

तुमको जवां देखना
मेरा भी ख़्वाब था "मधुर"
यूँ न मुझसे
शरमाया करो तुम

भोली सूरत, खुली जुल्फें, आँखे कटावदार
माथे पे रोज
लाल टिका
लगाया करो तुम

ये नखरे, ये अदा रोज दिखलाया करो तुम
किसी रात
मेरे सपने में भी
आया करो तुम।

27. हम तुम मिलेंगे जरूर

हम मिलेंगे जरूर
उम्मीदों के बीज हैं
खिलेंगे जरूर
हम मिलेंगे जरूर

आज फिजाओं में खुशबू है
बाग में टहलना जरूर
गुलाब के छोटे-छोटे बच्चे
मिलेंगे जरूर
हम मिलेंगे जरूर

शक्ल नहीं पहचानी सी
तो क्या हुआ
खुशबू तो है "मधुर"
इंतजार करना किसी चौराहे पर
मिलेंगे जरूर
हम मिलेंगे जरूर
हम मिलेंगे जरूर
उम्मीदों के बीज हैं
खिलेंगे जरूर
हम मिलेंगे जरूर।

28. अच्छा होता

जन्मे थे जहाँ से
मरते वहीं
अच्छा होता
जहाँ पनपे थे ख़्वाब
खत्म करते वहीं
अच्छा होता

ममत्व को दफ़ना कर
उसने हाथों में लश्कर दिया
मार-मार कर
खुद को हमने
पत्थर किया
पिघलते वहीं
अच्छा होता

उड़ने के साथ गिरना भी
परिंदो की
फितरत है
छूकर क्षितिज के
सारे छोर
गिरते वहीं
अच्छा होता

चलते-चलते

बे-दम हुए

रास्ते भी अब

कम हुए

भटकते वहीं

अच्छा होता

खाक-खाक पर लिखा है

"मधुर"

धुँए से

मेरा दर्द

जलते वहीं

अच्छा होता

जन्मे थे जहाँ से

मरते वहीं

अच्छा होता।

29. अन्नी

कल देर रात मेरे घर
कोई आया था अन्नी

सर को जानू पर रखकर
गीत ख़ुशी का सुनाया था अन्नी

आँखों पर जब छा गए गम के बादल
होंठो से मोती चुराया था अन्नी

कोमल हाथ पलकों पर रखकर
देर रात तक सुलाया था अन्नी

सुबह हुई तो क्या-क्या देखा
सीने पे बिंदी, होंठो पे लाली

सादो पे लम्बे-लम्बे बाल
किन-किन चीजों से मुझे सजाया था अन्नी

भूलूँ मैं कैसे वो "मधुर" रात
पहली बार किसी ने मुझे सीने से लगाया था अन्नी

कल देर रात मेरे घर
कोई आया था अन्नी।

30. आगे क्या होगा

सोचते हैं
इन अँधेरे रास्तों पर
कुछ दूर और चलकर
क्या होगा ?

अगर हम बुरे राह पर हैं
देखते हैं
इससे बुरा और
क्या होगा ?

सब हमें छोड़ अपनी मंजिल की ओर
बढ़ जाते हैं सोचते नहीं
टूटी बस्ती टूटे किनारों का
क्या होगा ?

सूरज को आज
सड़कों पर चलते देखा है
टूटे सितारों का
क्या होगा ?

चाँद ने आज दिन में
टहलने की ठान ली है
"मधुर" इन अँधेरे बस्ती के बंजारों का
क्या होगा ?

सोचते हैं
इन अँधेरे रास्तों पर
कुछ दूर और चलकर
क्या होगा ?

31. कम्प्रमाइज

इन बेढंग रास्तों से
ख़ामोशी से गुजर जाओ
अच्छा है

हवा का अब कोई रंग नहीं
उसी में मिल जाओ
अच्छा है

आँधियाँ से लड़ना मुनासिब नहीं
उनसे हाथ मिलाओ
अच्छा है

सूरज का निकलना भी अब तय नहीं
समय पर जाग जाओ
अच्छा है

जब जिंदगी का लक्ष्य ही माधुर्य है
"मधुकर" "मधुर" बन जाओ
अच्छा है

इन बेढंग रास्तों से
ख़ामोशी से गुजर जाओ
अच्छा है
हवा का अब कोई रंग नहीं
उसी में मिल जाओ
अच्छा है।

32. कुछ तो होगा

मुझे इश्क़ नहीं
लेकिन
कुछ तो होगा

कैसे
सुलझी हुई ज़ुल्फें
रह सकती हैं
यूँ उलझ कर
उसमें
कुछ तो होगा

दिल के आइने में
दिखती है
सिर्फ निगाहें उनकी
उनकी
आँखों पर
कुछ तो होगा

राह अलग है
सूरज-चाँद की
लेकिन
रास्ता
उनके मिलने का
कुछ तो होगा

यूँ झील सी
आँखों में
कूद गया
सोचा था
मौत या जिंदगी
कुछ तो होगा

"मधुर" हर राह पर
तुम नजर आते हो
मुझमें
कुछ नहीं
तो तुझमें
कुछ तो होगा

मुझे इश्क़ नहीं
लेकिन
कुछ तो होगा।

33. क्या मिला

आखिर क्या मिला खुद को छुपाने से
फिर याद आ गई तुम
किसी दर्द के
बहाने से

जब-जब चलती है
हवा दर्द की
नहीं भूलता हूँ तुझे लाख
भुलाने से

अँधेरे में जलोगी तो
नहीं छुपेगी रोशनी
लाख
छुपाने से

कल तक वो नशे की तरह
जलता था
आज उड़ गयी रोशनी
मैखाने से
आखिर क्या मिला खुद को छुपाने से।

34. क्या लिखूँ

नहीं है
मुझमें कुछ
छुपाने के लिए
क्या लिखूँ ?
तुम्हें
सुनाने के लिए

जुल्फों में लिपटी साँवली सूरत के लिए
प्यार में लिपटी
चांदनी मूरत के लिए
तड़पता तो होगा मेरा दिल भी
उस मूरत को
पाने के लिए

सागर सा प्यार इधर है
एक सच्चा इकरार इधर है
हम शायद बने ही हैं
इस प्यार के भँवर में
डूब
जाने के लिए

प्यार का हर रिश्ता अनमोल है
तेरी नथुनी की तरह दुनिया गोल है
और मेरा दिल एक
प्यार का झूमर
उसमें
नाचने के लिए

तुमको दिल में सजा रखा है,
एक गुड़िया से दुल्हन बना रखा है
क्यों सजते हो ?
तुम इन आइनों में
इस बेदर्द
ज़माने के लिए

नहीं मुझमें
कुछ
छुपाने के लिए
क्या लिखूँ ?
तुम्हें
सुनाने के लिए।

35. गुब्बारा

आज कल आदमी भी
गुब्बारे की तरह
अजीब से गुब्बार दिल में
छुपा कर रखा है

शर्म ही नचा रही है, वरना
एक बहुत हल्की सी
दीवार
सजा कर रखा है

ये जिंदगी उसी की है, जो
आज मारना चाहता है
जाने किन-किन रिश्तों में इंसान खुद को
फँसा कर रखा है

उदू मिलता नहीं,
और जमीं भाती नहीं
जाने क्या नविस्ता हाथों में
लिखा कर रखा है

कोई देख न ले
"मधुर" रंग-हवा-ए-हुस्न
"मधुकर" जाने किन-किन रंगों को दिल में
छुपा कर रखा है।

36. तुम्हें भुलाने में

खतों को आग
आग को धुआँ
धुएं को हवा से मिलाने में
कई सदियाँ लगेंगी तुम्हें भुलाने में

मुस्कान ऐसी जैसे
चुस्की आग की
शफत से उतरकर
दिल-ए-घर आने में
कई सदियाँ लगेंगी तुम्हें भुलाने में

लिखा प्यार
दिलों पे
और खमा तोड़ दी
आखरी शब्द चलाने में
कई सदियाँ लगेंगी तुम्हें भुलाने में

खलिख खोजने
खोलने और
फिर उसे खुद से अपना
गनीम बनाने में
कई सदियाँ लगेंगी तुम्हें भुलाने में

सखुन शब्द चुनने
उसे पिरोने और फिर
उसे बनाकर "मधुर"
संगीत सुनाने में
कई सदियाँ लगेंगी तुम्हें भुलाने में

खतों को आग
आग को धुआँ
धुएं को हवा से मिलाने में
कई सदियाँ लगेंगी तुम्हें भुलाने में।

37. रुतबा नहीं रहा

मेरी खामोशी में अब वो जज़्बा नहीं रहा
प्यार करने के अरमां तो बहुत हुए
जताने का वो
जज़्बा नहीं रहा

ढूंढ लेते थे अंधेरों में भी उन्हें
आज तो रौशनी है लेकिन
प्यार का वो
कस्बा नहीं रहा

अंगुलियाँ भी वही, हाथ भी वही
साथ चलने का जज्बा भी वही
शायद अब ये रास्ता ही
लम्बा नहीं रहा

वो मेरी पुरानी झोपड़ी जिसमें मैंने
अपने सपने बनाए
आज जाकर देखा तो वहाँ उसका
मलबा नहीं रहा
मेरी खामोशी में अब वो जज़्बा नहीं रहा
प्यार करने के अरमां तो बहुत हुए
जताने का वो
जज़्बा नहीं रहा।

38. ख़्वाब टूटे नहीं

सच तो ये है कि मैं तेरे बगैर
जीना नहीं चाहता
अगर ये ख़्वाब हैं तो ये टूटे नहीं या फिर मैं
सोना नहीं चाहता

तेरा प्यार एक
जाम है साकी
डुबो सको तो डुबो लो मुझको
ये दुनिया एक आग का दरिया
और मैं इसमें
बहना नहीं चाहता

शिकवा
तेरे नाम का
मेरे दिल को बहुत
रुलाता रहा
तुमने सुना नहीं और एक मैं जो
कहना नहीं चाहता
सच तो ये है कि मैं तेरे बगैर
जीना नहीं चाहता।

39. छू हो जाऊँ

मरूँ नहीं मैं छू हो जाऊँ
क्यों जलूँ मैं तिनका-तिनका
यूँ ही खुदा से रूबरू हो जाऊँ
मरूँ नहीं मैं छू हो जाऊँ

ये जिंदगी तेरा इतराना कैसा ?
लचक-लचक के बलखाना कैसा ?
जा मांग लिया खुदा से
मैं घुंघरू हो जाऊँ
मरूँ नहीं मैं छू हो जाऊँ

नरम-नरम फूलों की
रंग-बिरंगी क्यारियाँ
शीतल हवा से मिलती हैं
वादियाँ
अब तक भटकता हूँ
हवा बनकर
मैं किसी दिन तेरा
रूह न हो जाऊँ

मरूँ नहीं मैं छू हो जाऊँ
यूँ ही खुदा से रूबरू हो जाऊँ।

40. जलजला

एक बार फिर
जलजला आये
तुमसे मिलने का
सिलसिला आये

मैं जान हथेली पर लेकर बैठा हूँ
तू आये न आये
तेरा कोई तो
फैसला आये

मैं धड़कन बाँध कर रखा हूँ
दिल का भी, ज़मीं का भी
बस तू एक बार
तू एक बार मुस्कुराए

मैं भाग कर कहाँ जाऊँ
तेरी सरहद से
बाँहो में भर ले मुझको
मौत भी आये तो शायराना आये

रह लेंगे खामोश
यूँ ही हजारों पल
दुनिया वालों से कह दो
ये खंडहर न हटाये

एक बार फिर
जलजला आये
तुमसे मिलने का
सिलसिला आये।

41. जुल्फें फैलाओ

जुल्फें फैलाओ, और रोने दो मुझको
अपनी अंगुलियों की पंखुड़ी में
सोने दो मुझको

क्यों भटकूँ आवारा गलियों में
जब सब रास्ता एक है
आँचल में ही खोने दो मुझको

एक बीज जो जगा है कई रातों से
आज सुखी धरती में
बोने दो मुझको

दर्द को ज़ुबां की जरुरत नहीं
अब तो खामोश ही रहो और
रोने दो मुझको

जुल्फें फैलाओ, और रोने दो मुझको
अपनी अंगुलियों की पंखुड़ी में
सोने दो मुझको।

42. तुमसे मिलूंगा मैं

जब पतझड़ होगा
तेरे गुलशन में
तब खिलूँगा मैं
कभी तन्हाई में
आकर तुमसे
मिलूंगा मैं

जब तूफान नज़दीक
तुम्हारे आएगा
और खौफ मौत का
जहन पे छाएगा
तब जिंदगी क्या है
पूछूंगा मैं

जब धूप की तपिश
रंग जला देगी
हवा सारी खुशबू उड़ा देगी
तब जिंदगी क्या है
पूछूंगा मैं

जब उम्र का सावन
ढल जायेगा
वक्त रेत सा हाथ से

फिसल जायेगा
तब जीवन क्या है
पूछूंगा मैं

जब पतझड़ होगा
तेरे गुलशन में
तब खिलूँगा मैं
कभी तन्हाई में
आकर तुमसे
मिलूंगा मैं।

43. दिमागी तूफान

उजड़ी बस्ती
बिका मकान
नहीं रहा कुछ
ना रहा मैं इंसान

दिल में ही है खाइयां
गहरी-गहरी
चलता रहा है
दिमागी तूफान

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ
भागूँ तो खैर नहीं
सच है मेरा
बदलता रहा है इमान

उड़ता रहा हूँ मैं
जाने किन ऊँचाइयों की
चाह में, छूट गया पीछे
मेरा सारा बागवान

उजड़ी बस्ती बिका मकान
नहीं रहा कुछ
ना रहा मैं इंसान।

44. दिल अगर है समुन्दर

दिल अगर है समुन्दर बहाए मुझे
मंजिल नहीं, रास्ता नहीं, दिशा तो दिखाए मुझे

अकेला चिराग हूँ, अंधेरों में जलना मेरी नियति है
कोई उजालों में यूँ न जलाये मुझे

उनके बदन पर मेरा हाथ शोलो की तरह जलता है
साँस लेकर यूँ न भड़काए मुझे

जानता हूँ उस तक पहुंचना है मुश्किल
मगर "मधुर" ख़्वाब में तो यूँ न छोड़ कर जाये मुझे

दिल अगर है समुन्दर, बहाए मुझे
मंजिल नहीं, रास्ता नहीं, दिशा तो दिखाए मुझे।

45. नुपुर

सोने से पहले
तेरी जुल्फें सहलाया करेंगे हम

तुम जहाँ भी रहो
आँखों में होगी हँसी हमारी
जब भी तुम्हें याद आया करेंगे हम

हमारा जिस्म-ओ-जां भी
खिलौनों की तरह
यूँ सुलझाया-उलझाया करेंगे हम

कभी न सोचा था
ये चाँद भी होगा अपने दरमियाँ
दो सितारों को अंगुलियों पे नचाया करेंगे हम

कभी अगर तन्हा सो गए
तुम सुनना "नुपुर"
"मधुर" "मधुर" गुनगुनाया करेंगे हम

सोने से पहले
तेरी जुल्फें सहलाया करेंगे हम।

46. पीता नहीं हूँ मैं

बोतल-ए-शराब चुराई गई है
पीता नहीं हूँ मैं
पिलाई गई है

ये हसीं नशा कहाँ
मेरी तन्हा जिंदगी में
उनकी आँखों को देखो
कितनी शिद्दत से
सजाई गई है

लाल तबस्सुम ने ईमान
हिला दिया
वरना अभी तो
प्याली बस होंठो तक
लाई गई है

"मधुकर" क्या लिखूँ
उस शख्स पर
जिसका हुस्न
एक नायब सा शे'र
जो ग़ज़लों से चुराई गई है
बोतल-ए-शराब चुराई गई है
पीता नहीं हूँ मैं
पिलाई गई है।

47. फिर तन्हा हूँ मैं

आज चाँद भी नहीं
चांदनी भी नहीं
दूर तक दिखता बादल भी नहीं
आज फिर तन्हा हूँ मैं

जिस शहर में
मैंने जिंदगी गुजारी
आज हमारे पास कोई नही
आज फिर तन्हा हूँ मैं

शादी भी गुजरी तो
हादसों की तरह
आज हमारे पास कुछ नहीं
आज फिर तन्हा हूँ मैं

सुना है शहर में
बहुत नाम है
और हाथों में काम नहीं
आज फिर तन्हा हूँ मैं

पहले तो दर्द
होने की ख़ुशी थी
आज हमारे पास वो भी नहीं

आज फिर तन्हा हूँ मैं

कागज पर खत लिखा शिद्दत से
और फिर फाड़ दिया
अब कोई काम नहीं
आज फिर तन्हा हूँ मैं

इन लाशों के बीच
"मधुर" कैसे जिन्दा रह गया
आश्चर्य है
आज फिर तन्हा हूँ मैं।

48. वनिता रानी

पुरानी कहानी खत्म हुयी
शुरू हुई अब नई जिंदगानी है
इस शहर का एक ही राजा "मधुर"
जिसकी "वनिता रानी" है

मौसम में बहार आयी
"प्रीति" का अंकुर फूटा
दिल का डगर भी अब
सुहानी है

अब नई "रीती" होगी
जीने की नई "नीति" होगी
"बित्ती" की अँखियाँ
बड़ी मस्तानी है

बाबुल का प्यार मिला
और माँ का "बिंदु" भरा आँचल
जिंदगी जहाँ हमें
बितानी है

आता-जाता रहेगा दुःख-सुख
हम साथ-साथ रहेंगे
और रखेंगे याद
जीवन बहता पानी है

पुरानी कहानी खत्म हुयी
शुरू हुई अब नई जिंदगानी है
इस शहर का एक ही राजा “मधुर”
जिसकी “वनिता रानी” है।

49. बस एक बेबसी रह गयी

हर वक्त एक बेबसी
रह गयी
लफ्जों के जंगल में
अर्थ की कमी रह गयी

हर चीज थी
बिकने को तैयार वहाँ
और मेरी प्यासी आँखे
देखती रह गयी

सबने किया गिला
गम भी, गला भी
मेरी सिर्फ आँखे
गीली रह गयी

आपने सूरते-हाल पर
तरस आया
पुतलियाँ दूसरों की
खुशियाँ तलाशती रह गयी

लौट आये हम
अपने शहर
बस एक याद थी

जो जमी रह गयी

हर वक्त एक बेबसी

रह गयी

लफ्जों के जंगल में

अर्थ की कमी रह गयी।

50. बारिश में

कभी बारिश में
मेरे घर आया करो तुम
खुले आसमां के नीचे
नहाया करो तुम

जब हथेली पर चमके
ये बुँदे बारिश की
पलकों पे अपने
सजाया करो तुम

जब भी झटको
अपनी भींगी जुल्फों को
मोती पानी के मेरे चेहरे पे
बिखराया करो तुम

नए कपड़ों की फ़िक्र न करना
गीले कपड़ों को
मेरे दरवाजे पे
सुखाया करो तुम

कभी बारिश में
मेरे घर आया करो तुम
खुले आसमां के नीचे
नहाया करो तुम।

51. मैं बेखबर हूँ

ऐसी भी क्या जिंदगी
जिसमें
दिल का बसर ना हो
वो मेरी गली से
गुजरे
और मुझे खबर ना हो

ऐसा नहीं कोई पल
मेरी जिंदगी का
वो गम को सोचे
मेरी आँखों को
खबर ना हो

वक्त तो वो शह है
सिखा देता है
खुद जीना
बशर्ते आदमी आदमी रहे
मेरी तरह
बेखबर ना हो।

52. मैं तुझे भूलूंगा कैसे

अगर मुझे इश्क़ है
तो उसकी निगाहों में
वो प्यार नजर
आता क्यों नहीं है ?

लिखता है वो जो खत
मोती से, फरियाद के
वो खत मुझे
मिल पाता क्यों नहीं है ?

गाता तो है गीत मिलन के
बड़े प्यार से
वो मेरी धड़कन
सुन पाता क्यों नहीं है ?

देता है खुशबू जो
मेरे गुलशन को
वो फूल मुझमें
मिल जाता क्यों नहीं है ?

मुझे डर है कोई न देख ले
तुझे मेरी निगाहों से
वो चाँद मुझमें
छुप जाता क्यों नहीं है ?

ढूंढती रहती है निगाहें
उसे हर पल
दो पल वो मेरे सामने
रुक जाता क्यों नहीं है ?

उतर कर दरिया में
मैंने देख लिया,
आँखों से उसका चेहरा
उतर जाता क्यों नहीं है ?

मैं जा रहा हूँ अपनी राह पर
बनकर "मधुकर"
ये न कहना ये गुल कोई
मुझ पर आता क्यों नहीं है ?

अगर मुझे इश्क़ है
तो उसकी निगाहों में
वो प्यार नजर
आता क्यों नहीं है ?

53. रोता रहा

दर्द के मोती
पिरोता रहा
कल रात भर मैं रोता रहा
आँखों को अश्कों से
धोता रहा
रात भर मैं रोता रहा

वो आये मेरे पहलु में
बैठकर चले गए
उनको रही मेरे जागने की उम्मीद और
मैं उनके इंतजार में
सोता रहा

इस बेबसी में
मिलने-बिछुड़ने की ख़ुशी में
किसके कितने गिरे आंसू
सोचता रहा

रात भर मैं रोता रहा
दर्द के मोती
पिरोता रहा
कल रात भर मैं रोता रहा।

54. वो यहाँ भी है

वो वहाँ भी है, वहाँ भी है
और यहाँ भी है
मेरे मौत के ऊपर जमीं है
और जमीं के ऊपर आसमाँ भी है

मुझे ख़ुशी इस बात कि वो
हमें छोड़ गया
उसे कुछ पल का ही सही
पाने का गुमां भी है

मैं जानता था मौत के बाद भी
जगह नहीं मिलती इस दुनिया में
जितनी दगेबाज येें जमीं है
ये आसमां भी है

पहले ‘‘मधुर’’ अकेले जलता था
खुश था मगर आज वो बहुत खुश है
उसके साथ जलने को एक
समां भी है

वो वहाँ भी है, वहाँ भी है
और यहाँ भी है।

55. शहर चलता रहेगा

हम तुम गुम से
गुमनाम हो जायेंगे
यूँ ही
बदनाम हो जायेंगे
मगर शहर तो चल रहा है
चलता रहेगा

कल फिर सूरज निकलेगा
शाम होगी
तेरी याद की खुशबू
मुझमें तमाम होगी
मगर शहर तो चल रहा है
चलता रहेगा

तेरे प्यार का फूल
खिलकर बिखरेगा
इन्हीं बहारों में
रफ्ता-रफ्ता मिलेगा
मगर चर्चा हमारे प्यार का
चलता रहेगा
शहर तो चल रहा है
चलता रहेगा

दिल में लगी तेरे चाहत की
आग को
आंसुओं की थपकी से
सुला दिया
मगर धुआं बाजार का
उड़ता रहेगा
शहर तो चल रहा है
चलता रहेगा

कभी तो आएगी आखिरी
चुस्की तेरे याद की
मगर प्याला चाय का
चलता रहेगा
शहर तो चल रहा है
चलता रहेगा

हम तुम गुम से
गुमनाम हो जायेंगे
यूँ ही
बदनाम हो जायेंगे
मगर शहर तो चल रहा है
चलता रहेगा।

56. श्वाति की बून्द

सारे शहर में दहेज की
आग लगी है
वो मेरे घर तलक
आयेगा कैसे

मंजिल पर आकर बिखरा हूँ
देखेगा दूर से तो वो
टूटे अख्तर
जोड़ पायेगा कैसे

उसके आचमन में अब
आब नहीं है
और मैं प्यासा अब तक
मेरी प्यास बुझायेगा कैसे

ये ‘‘श्वाति’’ की बून्द नहीं है
हमारे अश्कों का ढेर है
‘‘मधुर’’ इन कंधो पर ये सब
सम्भल पायेगा कैसे

सारे शहर में दहेज की
आग लगी है
वो मेरे घर तलक
आयेगा कैसे।

57. सिमरन

तुम ही बताओ सिमरन
खुद का ये कैसा मौन है ?

पल-पल जीने के लिए
हम कितना मरते हैं
और जब मौत हो करीब
कितना डरते हैं
हम अगर आगे नहीं
तो पीछे हमारे कौन है ?

रुक-रुक कर चलती है सांसे
जिंदगी पल भर के लिए
रूकती नहीं
जीवन में
समय का ये कैसा दौड़ है ?

तुमको खोजने के लिए
दिल जला दिया
सारे शहर में आग लगा दिया
देखूँ उस धुएं के पीछे
छिपा कौन है ?

मैं तो बदज़ुबान हूँ सिमरन
मैं तो बोलूंगा
देखूँ ये खुदा कब तक मौन है।

58. भुला दें

सोचता हूँ मैं तुम्हें
क्यों न भुला दें
कमजोर पत्तियों की डाली को
मैं खुद ही हिला दें

मझधार में लटकी रहेगी
कब तक ये जिंदगी
नींव सी इस सरजमीं को
मैं खुद ही हिला दें

मुझको भूलने न देना
आदत है उनकी
क्यों न उनके लिखे खतों को
मैं खुद ही जला दें

जुदाई का आखिरी आँसू
कब दिखेगा कहीं ऐसा न हो
ताबूत के दरवाजे को
मैं खुद ही गिरा दें

सोचता हूँ मैं तुम्हें
क्यों न भुला दूँ
कमजोर पत्तियों की डाली को
मैं खुद ही हिला दें।

59. परसिस्टेंसी

गज़ब का फूल है
कभी पूरा खिलेगा नहीं
हवा के रुख में
कभी मिलेगा नहीं

स्थिर दरिया का पानी है
हिलता ही नहीं है
पानी से मिलकर रहेगा
कभी पानी में मिलेगा नहीं

दिल से चलाता है
दिमाग़ की बात
फँस भी गया जज़्बातों से
बारिश में कभी भीगेगा नही

वो आखिरी पत्ता है
पतझड़ में भी
मुझसे लगा रहेगा
मेरी साख से गिरेगा नहीं

गज़ब का फूल है
कभी पूरा खिलेगा नहीं
हवा के रुख में

कभी मिलेगा नहीं

खोल कर रखता है
अपनी उलझन
"चिया" के फूल सा हाथ
बिना मांगे मिलेगा नहीं

वो उतना ही अपना है जितना चाँद
है तो है
अपने आसमान पे दुबारा
कभी दिखेगा नहीं

गज़ब का फूल है
कभी पूरा खिलेगा नहीं
हवा के रुख में
कभी मिलेगा नहीं।

60. मुझे जरूरत है

हाथ थामकर ऐसा लगा
तुम्हें नहीं
मुझे सहारे की जरूरत है

बीच साहिल में मैं
ठहरा हुआ हूँ
मुझे किनारे की जरूरत है

सीधी-सादी सी
मंजिल नहीं हमारी
मुझे तिराहे की जरूरत है

कोई हो जो और करीब ला दे
सुहाने सफर में बरसात
कड़ाके की जरूरत है

थाम लो पल भर के लिए
मेरा दामन तुम्हें और कितने
इशारे की जरूरत है

चाँद हो
खूब चमको तुम
मुझे तो बस तुम जैसे
सितारे की जरूरत है

हाथ थामकर ऐसा लगा

तुम्हें नहीं

मुझे सहारे की जरूरत है।

61. रंग दे

रंग दे
मुझे अपने सुनहरे रंग से
अभी तक
निखरा नहीं हूँ मैं
तेरे अंगुलियों की जाल से
अभी तक
निकला नहीं हूँ मैं

है क्या
तू नरम-नरम फूलों की डाली
खुशबू हूँ तेरे जिस्म का
अभी तक
निकला नहीं हूँ मैं

कहीं मैं
मर ना जाऊँ
तेरे मासूम
आँसुओं के ढेर में
इस दरिया से
अभी तक
निकला नहीं हूँ मैं

मैं तेरा हूँ
तू सँभाल सकती है
तू सँभाल ले
अभी तक बिखरा नहीं हूँ मैं

मन भी एक, मंजिल भी एक
तू मेरे साथ चल
इश्क़ की राह में
अभी तक
फिसला नहीं हूँ मैं

रंग दे
मुझे अपने सुनहरे रंग से
अभी तक
निखरा नहीं हूँ मैं
तेरे अंगुलियों की जाल से
अभी तक
निकला नहीं हूँ मैं।

62. चाँदनी की गुड़िया

रुक-रुक कर वो कहीं
खो जाती है
मैं जागता रहता हूं
तन्हाई की आग में
और वो देकर अंगड़ाई
सो जाती है

अंधेरी रात में एक तारा
शोला बनकर
गिरता है
प्रीत के सागर में
और वो सजाकर लम्हों को
मधुरमय हो जाती है
मैं जलता रहता हूं
तन्हाई की आग में
और वो देकर अंगड़ाई
सो जाती है

मैं चाँद जमीं पर
लेकर आता हूँ
उसके खेलने के लिए
तोड़कर ये खिलौना

चुपके से वो
सो जाती है
मैं जागता रहता हूं
तन्हाई की आग में
और वो देकर अंगड़ाई
सो जाती है

मैं जख्मों को
सीता हूँ
उसकी
धड़कनों से
वो आकर मेरी
जानू पर
सो जाती है

चांदनी की गुड़िया
मुझे दिखती है
तन्हा रातों को
और जब मैं उसे
पकड़ूँ वो छू
हो जाती है

मैं जलता रहता हूं
तन्हाई की आग में
और वो देकर अंगड़ाई

सो जाती है
रुक-रुक कर वो कहीं
खो जाती है
मैं जलता रहता हूं
तन्हाई की आग में
और वो देकर अंगड़ाई
सो जाती है।

63. तितली

ये तितली तेरी, ये पर तेरा
हमें तो बस
उड़ने का
इशारा होना चाहिए

जज़्बात खुद-ब-खुद बयां होंगे
हाथों में
बस इक
प्याला होना चाहिए

जब भी तेरी इश्क़ का
ज़िक्र हो
चर्चा महफिल में
हमारा होना चाहिए

क़त्ल कर दो जैसे भी
मंज़ूर है मुझको
बस कातिल
प्यारा होना चाहिए

"मधुकर" हो सकता है
आज भी किसी का
बस वो जी से

कुंवारा होना चाहिए

ये नाव रुक सकती है
साहिल से पहले भी
बस एक खूबसूरत
किनारा होना चाहिए

शहर का चाँद हो
भले सबका
तू
हमारा होना चाहिए

ये तितली तेरी, ये पर तेरा
हमें तो बस उड़ने का
इशारा होना चाहिए।

64. इश्क़ अब नहीं है

जो था
वो अब नहीं है
कल रात चाँद को
कटोरे में भर कर
लाया था घर
वो अब नहीं है

वो फूल जो सपनों में
दिखता था बार-बार
मेरे बगीचे में
वो अब नहीं है

डायरी में दिखता है
मुहब्बत का फूल
उसकी खुशबू
वो अब नहीं है

मीठी-मीठी सी बेचैनी है
खुमारी की
नशा
वो अब नहीं है

जख्म तो वक्त के

साथ बढ़ते जा रहे हैं
दर्द जो था
वो अब नहीं है

धुआँ-धुआँ हुई
जिंदगी
आग़
वो अब नहीं है

खुली मुट्ठी
खाक की
जो था "मधुकर"
वो अब नहीं है।

65. एक चिन्गारी

मेरे दर्द के आग की एक चिन्गारी
उधर भी होगी

खामोशी रह नहीं सकती
कभी तन्हा
यही बीमारी शायद
उधर भी होगी

जले दिल का बना काजल
उन आँखों को
बहुत भाता है
किसी बहाने से
सजने की तैयारी
उधर भी होगी

चाँद देख रहा है
मैं भी हूँ तन्हा यहाँ
मेरे कशिश की खुमारी
उधर भी होगी

मेरे दर्द के आग की एक चिन्गारी
उधर भी होगी।

66. ये दिल्ली शहर है

अपना शहर छुट गया
यहाँ "लखनऊ" की मुस्कान नहीं है
ये "दिल्ली" शहर का ताना-बाना है

पहले दिन ही सबक सिखा दिया
यहाँ काम धरम नहीं
मज़हब तो ज्यादा खाना है

यहाँ सही काम का दाम नहीं है
और सर पे बेवजह
कश्मकश का कारखाना है

यहाँ जिंदगी फाइल सी
कुछ मेजों और चंद कुर्सियों में फंसी हुई
और ये शहर कहता खुद को दीवाना है

यहाँ की दिनचर्या अजीब सी
दिन में चिकेन, शाम को दारू
और शौक़ देर रात को घर जाना है

लेकर तो आ गये है खुशबू
"मधुर" अपने शहर "लखनऊ" की
मगर बहुत मुश्किल
दिल्ली शहर महकाना है
यहाँ लखनऊ की मुस्कान नहीं है
ये दिल्ली शहर का ताना-बाना है।

67. होली का रंग

ख़्वाहिश ऐसी कि ख़्वाब में उनके न आऊँ मैं
बहुत सुकूं से सोते हैं वो उनको न जगाऊँ मैं

उनके गले से बांधकर मोती सा चमकूँ
आँखों से बिखर कर कहीं दूर न जाऊँ मैं

रात को चुडियाँ उनकी ग़ज़लें कहती हैं
खामोशी से सुनूँ अपनी कुछ न सुनाऊँ मैं

ये त्यौहार का रंग है, जल्द ही उतरेगा
जो दे खुशबू उम्र भर ऐसा कोई रंग लगाऊँ मैं

ख़्वाहिश ऐसी कि ख़्वाब में उनके न आऊँ मैं
बहुत सुकूं से सोते हैं वो उनको न जगाऊँ मैं।

68. घर मिलेगा कब

अपनी-अपनी उम्मीद का सूरज
निकलेगा कब ?
लाख उलझनों में फंसा मेरा घर
मिलेगा कब ?

कब बिल्डर के दो-सौ घोड़े
आसमान से उतरकर जमीं पर आयेंगे ?
फूल सुन्दर-सुन्दर हमारे बगीचे में भी
लहराएंगे कब ?

कब होगा संघर्ष कम
सैलरी का ई.एम.आई. से ?
खर्चा रेंट का आखिर
बचेगा कब ?

आज ख़बर छपी है अखबार में
खुदा दर्द इंग्लिश में जल्दी सुनता है
मेरी ये खामोश दुआ वो
सुनेगा कब ?

अधजले चिराग को
मसल कर बुझा देना आसान है,
तू ही बता खुदा अब

हमारी बस्ती का अँधेरा
घटेगा कब ?

अब तो हम भी बैठ गए
दोमुहे से नाव पर तेरी चाह में
देखता हूँ, तू मुझे
मिलेगा कब ?

अपनी-अपनी उम्मीद का सूरज
निकलेगा कब ?
लाख उलझनों मे फंसा मेरा घर
मिलेगा कब ?

69. मिसिंग यू

वक्त को
पकड़ता रह गया
मैं तब भी और आज भी
तड़पता रह गया

चंद मुलाकातों में वो
छोड़ गया ढेर सारी
खुशबू और मैं उनको
पकड़ता रह गया

वक्त को
पकड़ता रह गया
मैं तब भी और आज भी
तड़पता रह गया

मेरी सारी आग को जला गयी
उसकी निगाहें
जिस्म यूँ ही
सुलगता रह गया

उसकी छोटी-छोटी अदाओं ने
मेरी साँस छीन ली
ये दिल बेवजह
धड़कता रह गया

वक्त को
पकड़ता रह गया
मैं तब भी और आज भी
तड़पता रह गया

समां गयी उसकी खुशबू
इन्हीं फिज़ाओं में
"मधुर" फूल बनकर आंसू
बिखरता रह गया

वक्त को
पकड़ता रह गया
मैं तब भी और आज भी
तड़पता रह गया।

70. मधुकर निराला तो अब हुआ है

सूरज तो उग चुका था अँधेरे में
मगर उजाला तो अब हुआ है

जो भी मिला जहर मैंने पी लिया
कंठ तो काला अब हुआ है

मंजिल तू देख मुझे मैं अब भी हारा नहीं
पैरों में छाला तो अब हुआ है

कल जो इसी सरजमीं पे टहलता था
वो तारा तो अब हुआ है

अब दिखेगी नशेमन जिंदगी
ख़त्म प्याला तो अब हुआ है

पहुँच गई बात दिल से जी तक
"मधुकर" निराला तो अब हुआ

सूरज तो उग चुका था अँधेरे में
मगर उजाला तो अब हुआ है।

71. सितारा मिल गया

मुझे वो चांदनी नहीं मिली
मगर सितारा मिल गया
बहकी हुई कश्ती को नदी का
वो किनारा मिल गया

अंगुली झटक कर गया था
वो मेरी बीच राह में
पकड़ने को आज दुपट्टे का
वो किनारा मिल गया

आग में जल गई थी मेरी बस्ती
आज याद किया तो
आँखों मे वही धुएं भरा
नजारा मिल गया

एक नशा उतरा नहीं था
मेरी जुबान से
हाथों में दूसरा
प्याला मिल गया

मुझे वो चांदनी नहीं मिली
मगर सितारा मिल गया
बहकी हुई कश्ती को नदी का
वो किनारा मिल गया।

72. कुछ तो लाओ

तीन पैरों के साथ
शुरू की थी यात्रा ‘‘मधुर’’
फिर भी
अधूरी रह गयी

सीखा मनी का एक मंत्र
"कुछ तो लाना है"
सो ले आया
होटल का
चादर, तकिया, साबुन
फिर भी
उम्मीद-ए-हसरत
अधूरी रह गयी

रात भर
मुन्नी बदनाम हुई
नाच-नाच के तमाम हुई
उनको अपने पैरों पे
नचाने की हसरत
अधुरी रह गयी

एक बोतल को
कितनों ने

कितनी बार पिया
याद नहीं
मेरी तो प्यास
अधूरी रह गयी

लौट आये हम अपने शहर
अच्छा हुआ
अनंत इच्छाओं के बीच
मेरी
कुछ इच्छा
अधूरी रह गयी

तीन पैरों के साथ
शुरू की थी यात्रा "मधुर"
फिर भी
अधूरी रह गयी।

73. मौसम

मौसम अगर बेवफा हो
तो हमें
उसके किसी भी रूप को
सहना पड़ता है

जिसको हमने शब्द दी
ज़ुबां दी, उसके सामने भी
खामोश
रहना पड़ता है

जो जानते हैं सारे
जज़्बात मेरे
उनसे भी कभी "हम खुश हैं"
कहना पड़ता है

हम जैसों की
मंजिल क्या "मधुर"
जिधर की हो धार
बहना पड़ता है
मौसम अगर बेवफा हो
तो हमें
उसके किसी भी रूप को
सहना पड़ता है।

74. रेड लाइट

रेड लाइट पर खड़े बच्चों के अरमानों को
खरीद कर देखो
इनके रंग-बिरंगे गुब्बारों को
खरीद कर देखो

फटे-चिटे कपड़ों में तन नहीं दिखता
तकदीर दिखती है
ये जो बेचे तस्वीर
घर की दीवारों पर सजा कर देखो

स्वाद-ए-बर्गर फीका हो जायेगा
उनके नसीब की रोटी
अपनी ज़ुबां पे
लगाकर देखो

नींद अगर नहीं आती हो
मखमल के बिस्तर पर
कैसे सोते हैं ये
कभी इनके घर भी
जाकर देखो

इनमें भी अरमां बहुत हैं
ये भी खूब उड़ेंगे

इनको एक बार पिंजरों से
उड़ा कर देखो

रेड लाइट पर खड़े बच्चों के अरमानों को
खरीद कर देखो
इनके रंग-बिरंगे गुब्बारों को
खरीद कर देखो।

75. क़ब्र पर पैग़ाम

निमजाँ में जिन-जिन को
भेजा था पैग़ाम
आने वालों में
एक नाम उनका भी है

ख़बर छपी है
अख़बार में
मेरे जनाज़े की
आने जाने वालों में एक
नाम उनका भी है

यूँ ही नहीं ये कश्ती पहुँची
इस मुक़ाम तक
कुछ तो
काम उनका भी है

कुछ ऐसा लिखो
मेरी क़ब्र पर
ये दुनिया याद करे
"अच्छा तो नाम उनका भी है"

अब वो सँभालेंगे मेरी
वसीयत के फूल

कुछ तो

काम उनका भी है

निमजाँ में जिन-जिन को

भेजा था पैग़ाम

आने वालों में

एक नाम उनका भी है।

76. आदमी

यूँ तो है बेकार
आदमी
तन्हाइयों का
शिकार
आदमी

दो किनारों में फँसा हुआ
पानी का धार
आदमी

अपने ही जज़्बे से
खेलता हुआ
अपने ही दिल का
गुनहगार
आदमी

अपने गुलशन के फूल
तोड़ता है
करता है आदमी का ही
शिकार
आदमी
यूँ तो है बेकार
आदमी।

77. उधार लेते जाओ

सारी समस्याओं का
उपचार लेते जाओ
मुझसे थोड़ा पैसा
उधार लेते जाओ

खुद को मत बेचो
अपना-अपना हुनर बेचो
मुझसे एक नया
बाज़ार लेते जाओ
थोड़ा पैसा उधार लेते जाओ

कब तलक बैठोगे
भूखे पेट
वसीयत के काग़ज़ पर
बाहर निकलो
घर का सारा सामान लेते जाओ
थोड़ा पैसा उधार लेते जाओ

आखिर कब तक
इन्तजार करेगी "मधुर"
घर में सजी हुई दीया-बाती
ऐसा करोगे मेरा सिगार लेते जाओ
थोड़ा पैसा उधार लेते जाओ

कर लो पहले से
टूटी हुई छप्पर ठीक
बरसात आने को है
घर थोड़ा औज़ार लेते जाओ
थोड़ा पैसा उधार लेते जाओ

सफर सपनों का लंबा है
जिंदगी छोटी
मत लगो लाइनों में
मेरे से अनोखी रफ्तार लेते जाओ
थोड़ा पैसा उधार लेते जाओ

"*Loan ka ek hi Mantra
My Money Mantra*"
एक मंत्र भी है और एक तंत्र भी
मुझसे ढेर सारा व्यापार लेते जाओ
थोड़ा पैसा
उधार लेते जाओ।

लेखक परिचय

नाम	:	मधुकर सहाय
उपनाम	:	मधुर
पिताजी का नाम	:	स्व. श्री धनंजय सहाय
माताजी का नाम	:	श्रीमती मधुबाला सहाय
पत्नी का नाम	:	श्रीमती वनिता भारती सहाय
पुत्र का नाम	:	औसम अर्श सहाय
जन्म तिथि	:	12-08-1977
जन्म स्थान	:	छपरा, बिहार
वर्तमान पता	:	फ्लैट नं. 1103, टॉवर 21, पारस टियेरा, सेक्टर 137, नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत, पिन - 201305
शिक्षा	:	मास्टर ऑफ़ फाइनेंस एंड कंट्रोल (M.F.C) लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत
व्यवसाय	:	सर्विस
पद	:	वॉइस प्रेसिडेंट, माई मनी मन्त्रा, दिल्ली
व्यवसाय पता	:	५०३ सूर्याकिरण बिल्डिंग, के०जी० मार्ग, दिल्ली, पिन : ११०००१
सामाजिक कार्य	:	वाइस चेयरमैन, आई.आई.ए (दिल्ली चैप्टर)
स्थाई पता	:	गणेश भवन, मोहन नगर, छपरा, बिहार
मोबाइल नम्बर	:	+91 9811606231
Email ID	:	madhur.depression@gmail.com Madhukar.sahay.noida@gmail.com